अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ चल रहे 47वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर रविवार दिनांक 26 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विपुल के. मोटानी मुम्बई (राष्ट्रीय अध्यक्ष-फैडरेशन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुभाषजी चांदीवाल मुम्बई, श्री विलासजी जैन शिकागो व श्री जयेशभाई टोलिया शिकागो के अतिरिक्त फैडरेशन की राष्ट्रीय व प्रान्तीय कार्यकारिणियों के सदस्यगण एवं डॉ. भारिल्लजी सहित सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

सभा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मंगलाचरण द्वारा प्रारम्भ हुई। संचालन कर रहे पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री-फैडरेशन) ने दिनांक 16 दिसम्बर 2012 को मौ में ब्र. रवीन्द्रजी की शिष्या ब्र. बहिन के साथ घटित घटना का उल्लेख करते हुए सदन में प्रस्ताव रखा कि अ.भा. जैन युवा फैडरेशन इस अवसर पर पूरी तरह पीड़ित परिवार एवं ब्र. रवीन्द्रजी के साथ है और इस घटना से सबक लेते हुए फैडरेशन समाज को एकजुट करके उसके नैतिक एवं धार्मिक जागरण के विशाल कार्यक्रम को अपने हाथ में ले लेवें ताकि भविष्य में इसप्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

इसका समर्थन करते हुए श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सोनूजी शास्त्री अमहदाबाद, श्री मंथनजी गाला मुम्बई, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, श्री कान्तीभाई मोटानी मुम्बई, श्री प्रमोदजी मोदी सागर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई इत्यादि ने अपने विचार रखते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया और अपने सुझाव भी प्रस्तुत किये। ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने भी इस कार्य की उपयोगिता बताते हुए संचार के सभी आधुनिक साधनों का प्रयोग करते हुए जनजागरण की आवश्यकता बतलाई और फैडरेशन द्वारा यह कार्य अपने हाथ में लेकर शीघ्रता से पूर्ण करने की कामना की।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने समुचित मार्गदर्शन देते हुए सभा से प्रस्ताव पारित करने का आग्रह किया। अन्त में करतल ध्वनि के साथ सभा ने सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित कर दिया। फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल मोटानी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्रस्ताव का स्वागत किया। अन्त में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत मैं ज्ञानानन्द स्वभावी के समूहगान के साथ सभा विसर्जित हुई। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 360 अंक : 12

सौदा कर लै...

कर लै हौ जीव, सुकृत का सौदा कर लै।
परमारथ कारज कर लै हो ।। टेक।।
उत्तम कुल कौं पायकैं, जिनमत रतन लहाय।
भोग भोगवे कारनैं, क्यौं शठ देत गमाय।।1।।
व्यापारी वनि आइयौ, नरभव हाट बाजार।
फलदायक व्यापार करि, नातर विपति तयार।।2।।
भव अनन्त धरतौ फिर्‌यौ, चौरासी वनमाहिं।
अब नर देही पायकैं, अघ खोवै क्यौं नाहिं।।3।।
जिन मुनि आगम परखकै, पूजौ करि सरधान।
कुगुरु कुदेव के मानवैं, फिर्‌यौ चतुर्गति थान।।4।।
मोह नींदमां सोवतां, डूबौ काल अटूट।
'बुधजन' क्यौं जागौ नहीं, कर्म करत है लूट।।5।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

8 अंग सहित सम्यक्त्व

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिंढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

६. स्थितिकरण अंग का वर्णन

किसी कषायवश, रोगादि की तीव्र वेदनावश, कुसंग से, लोभ से या अन्य किसी प्रतिकूलता के प्रसंग में धर्मी जीव श्रद्धा से या चारित्र से डिग रहा हो या शिथिल हो रहा हो तो उसे प्रेमपूर्वक वैराग्य-उपदेश से या अन्य अनेक उपाय से धर्म में स्थिर करना, अपने आत्मा को भी धर्म में दृढ़ करना एवं अन्य साधर्मी को भी धर्म में दृढ़ करना स्थितिकरण है।

शरीर में तीव्र रोग आ जाये, व्यापार में अचानक बड़ा नुकसान हो जाये, स्त्री-पुत्रादि का मरण हो जाये, विषयों में मन चलित हो जाये, कोई तीव्र मान-अपमान का प्रसंग बने; उस समय अपने परिणाम को अस्थिर होता देखकर धर्मात्मा शीघ्र ही ज्ञान-वैराग्य की भावना के बल से अपने आत्मा को धर्म में दृढ़ करे कि अरे आत्मा! तुझे यह क्या हुआ ? ऐसा महा पवित्र रत्नत्रयधर्म पाकर ऐसी कायरता तुझे शोभा नहीं देती। तू कायर मत हो। अंतर में जो शुद्ध आत्मस्वरूप परम महिमावंत देखा है, उसकी बारम्बार भावना कर। संसार के दुर्ध्यान से तो नरकादि तीव्र दुःख तुमने अनन्त बार भोगे; अतः अब उस दुर्ध्यान को छोड़ और चैतन्य की भावना

कर। अनेक प्रकार के धर्म चिंतन से अपने आत्मा को धर्म में स्थिर कर तथा अन्य साधर्मीजनों को भी अपना ही समझकर सर्वप्रकार की सहायता से धर्म में स्थिर कर ह्न ऐसा भाव धर्मात्मा को होता है।

किसी को उपदेश द्वारा धर्म में उत्साहित करे, किसी को धन से भी सहायता करे, किसी की तन से सेवा करे, किसी को धैर्य बँधावे, किसी को अध्यात्म की महान चर्चा सुनावे ह्न ऐसे सर्वप्रकार से तन-मन-धन-ज्ञान से धर्मात्मा की आपत्ति को दूर करके उसे धर्म में स्थिर करता है। अरे, ऐसा मनुष्य भव और जैनधर्म अनन्तकाल में मिला है, ऐसे अवसर को यदि चूक जाओगे तो फिर अनन्तकाल में ऐसा अवसर मिलना कठिन है। इस समय में जरा-सी प्रतिकूलता के दुःख से डरकर यदि धर्म की आराधना में चूक जाओगे तो फिर संसार-भ्रमण में नरकादि का अनन्त दुख भोगना पड़ेगा, नरकादि के तीव्र दुःख के समक्ष यह प्रतिकूलता तो कुछ भी नहीं है; अतः कायर होकर आर्त्त परिणाम न करके, वीर होकर धर्मध्यान में दृढ़ रहे। आर्त्तध्यान करने से तो दुःख और भी बढ़ जायेगा। संसार में तो प्रतिकूलता होती ही है; अतः धैर्यपूर्वक धर्मध्यान में दृढ़ रहो। तुम तो मुमुक्षु हो, धर्म के जानने वाले हो, ज्ञानवान हो; इस प्रसंग में दीन होकर धर्म से डिग जाना तुझे शोभा नहीं देता; अतः वीरतापूर्वक आत्मा को सम्यक्त्वादि की भावना में दृढ़ता से लगाओ। पहले अनेक महापुरुष पांडव, सीताजी इत्यादि हुए हैं। उन्हें स्मरण करके आत्मा को धर्म की आराधना में उत्साहित करो; अतः अपने व पर के आत्मा को सम्बोधित करके धर्म में स्थिर करना सम्यग्दृष्टि का स्थितिकरण अंग है।

प्रतिकूलता आने पर आप स्वयं धैर्य न छोड़े और अन्य साधर्मी को भी घबराहट न होने दे, उन्हें भी धैर्य बँधावे। अरे, चाहे मरण भी आवे या कितनी भी प्रतिकूलता आवे; परन्तु मैं कभी अपने धर्म से चलायमान नहीं होऊँगा, आत्मा की आराधना को नहीं छोड़ूँगा ह्न ऐसे निःशंक दृढ़ परिणाम से धर्मी अपने आत्मा को धर्म में स्थिर रखते हैं। कोई भय या लालच दे तो भी वे धर्म से नहीं डिगते। मोक्ष के साधकों के आत्मपरिणाम में ऐसी दृढ़ता होती है।

सम्यग्दृष्टि के सम्यक्त्वादि निश्चयधर्म में जितनी स्थिरता हुई, उतना धर्म है, वह वीतरागभाव है और दूसरे साधर्मी को धर्म में स्थिर करने का भाव शुभराग है,

वह धर्म नहीं है; किन्तु धर्मी को धर्मप्रेम का ऐसा भाव आता है। श्रेणिक राजा के पुत्र वारिषेण मुनि ने अपने मित्र को मुनिधर्म में स्थितिकरण किया था, उनकी कथा पुराणों में प्रसिद्ध है, वह 'सम्यक्त्व कथा' में आप पढ़ सकते हैं। इसप्रकार स्थितिकरण नामक छठवें अंग का वर्णन किया है।

७. वात्सल्य अंग का वर्णन

जिसप्रकार गाय को अपने बछड़े पर किसीप्रकार की आशा के बिना निरपेक्ष प्रेम होता है, उसीप्रकार धर्मी को अन्य साधर्मीजनों के प्रति सहज ही प्रेम होता है। उन्हें अपना जानकर उन पर वात्सल्य आता है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र धारक जीवों के समूह को धर्मी जीव अपना हितैषी स्वजन मानते हैं। उनकी प्राप्ति होने पर मानो कोई महान निधान मिल गया है ह्न ऐसी अत्यन्त प्रीति उत्पन्न होती है। उनका आदर, उनके गुणों की स्तुति, आहार-पान-सेवा आदि में आनन्द मानना वात्सल्य अंग है।

धर्मी जीव किसी को दिखाने के लिए कपट से नहीं करते या किसी प्रकार की आशा नहीं रखते; परन्तु धर्म की प्रीति के कारण धर्मी को ऐसा प्रेमभाव सहज आ जाता है। जिस वीतराग धर्म की मैं साधना कर रहा हूँ, उसी धर्म की यह साधना कर रहे हैं, अत: यह मेरे साधर्मी हैं, मेरे साधर्मी को कोई दु:ख न हो, उन्हें धर्म में कोई विघ्न न हो ह्न इसप्रकार साधर्मी के प्रति वात्सल्य होता है।

यद्यपि राग तो है; परन्तु उस राग की दिशा संसार की ओर से पलटकर धर्म सन्मुख हो गई है। संसार में स्त्री-पुत्र-धन आदि का राग पापबंध का कारण है और साधर्मी के प्रति धर्मानुराग में तो अपने धर्म की भावना का पोषण होता है। अन्तरंग में तो धर्मी को अपने शुद्ध ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूप आत्मा में परम प्रीति है; उसे ही वह अपना स्वरूप जानता है; वह परमार्थ वात्सल्य है और व्यवहार में रत्नत्रय के धारक अन्य साधर्मी जीवों को अपना समझकर उन पर परम प्रीतिरूप वात्सल्य आता है। धर्मात्मा पर आये हुए दु:ख को धर्मी नहीं देख सकते। इसप्रकार उनका दुख मिटाने का उपाय करते हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव को किसी भी जीव के प्रति वैरभाव नहीं होता, तो फिर धर्मी के प्रति ईर्ष्या कैसे हो ? दूसरे जीव अपनी अपेक्षा आगे बढ़ जायें, वहाँ उसे द्वेष नहीं

होता; परन्तु अनुमोदना और प्रेम आता है। साधर्मी को एक-दूसरे के प्रति प्रेम होता है, कैसा प्रेम ? माँ को अपने पुत्र पर प्रेम हो, वैसा निर्दोष प्रेम; गाय को अपने बछड़े पर प्रेम होता है, वैसा निष्पृह प्रेम धर्मी को साधर्मी के प्रति होता है। अभी इनके दु:ख में सहायता करूँगा, तो भविष्य में किसी समय ये मुझे काम आयेंगे ह्न ऐसी अपेक्षा नहीं रखते; परन्तु धर्म के सहज प्रेमवश निस्पृह भाव से धर्मी के प्रति वात्सल्य रखते हैं।

जिसप्रकार माता अपने पुत्र का दु:ख नहीं देख सकती, हिरनी अपने बच्चे के प्रति प्रेमवश उसकी रक्षा हेतु सिंह के सन्मुख जाती है। सच्ची माता के प्रेम की एक बात आती है कि एक बालक के लिए दो स्त्रियों में झगड़ा हुआ। न्यायाधीश ने (सत्य की परीक्षा हेतु) बालक के दो टुकड़े करके दोनों को एक-एक देने की आज्ञा दी। यह सुनते ही सच्ची माता तो जोर से रोने लगी, पुत्र की रक्षा हेतु उसने कहा ह्न इसे ही बालक दे दीजिए। मुझे नहीं चाहिए। उदाहरण में से केवल इतना लेना है कि सच्ची माता पुत्र का दु:ख देख नहीं सकती, उसका वास्तविक प्रेम उमड़ पड़ता है।

प्रद्युम्नकुमार १६ वर्ष की अवस्था में जब घर पधारे, तब रुक्मिणी माता को हृदय में वात्सल्य की धारा उमड़ पड़ी थी; उसीप्रकार साधर्मी का प्रेम वास्तविक प्रसंग पर छिपा नहीं रहता। सम्यग्दृष्टि को सम्यग्दृष्टि के प्रति अन्तर में प्रेम होता है; उन्हें देखते ही, उनकी बात सुनते ही प्रेम आता है। जिसे धर्म के प्रति प्रेम होता है, उसे धर्मी के प्रति प्रेम होता ही है; क्योंकि धर्म और धर्मी भिन्न नहीं हैं। (न धर्मो धार्मिकै: विना)।

यह तो सम्यग्दर्शन सहित आठ अंग की बात है; परन्तु इसके पूर्व भी धर्म के जिज्ञासु को धर्म के प्रति वात्सल्य, धर्मात्मा का बहुमान आदि भाव होते हैं। मोक्ष का सच्चा कारण तो अन्तर में परद्रव्य से भिन्न अपने आत्मा की रुचि और ज्ञान करना है। सम्यग्दर्शन के बिना शुभराग से मोक्षमार्ग नहीं होता। सम्यग्दर्शन के बाद भी जो राग है, वह मोक्षमार्ग नहीं है। मोक्षमार्ग तो सम्यग्दर्शनादि वीतरागभाव ही है। जहाँ राग की भूमिका है, वहाँ ऐसे वात्सल्यादि भाव अवश्य आते हैं।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 47वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

जारिसिया सिद्धप्पा भवमल्लिय जीव तारिसा होंति।
जरमरणजम्ममुक्का अट्ठगुणालंकिया जेण ।।४७।।

(हरिगीत)

गुण आठ से हैं अलंकृत अर जन्म-मरण-जरा नहीं।
हैं सिद्ध जैसे जीव त्यों भवलीन संसारी कहे।।४७।।

जैसे सिद्ध आत्मा हैं, वैसे भवलीन (संसारी) जीव हैं, जिससे (वे संसारी जीव सिद्धात्माओं की भाँति) जन्म-जरा-मरण से रहित और आठ गुणों से अलंकृत हैं।

(गतांक से आगे ...)

एकसमय की पर्याय को गौण करें तो सारे संसारीजीव सिद्ध समान हैं।

संसार में रहनेवाले सभी आत्मा सिद्ध समान हैं। लेंडी पीपल में प्रगट होने वाली चौंसठ प्रहरी चरपराहट स्वभावशक्ति में भरी हुई है। वर्तमान एकसमय की थोड़ी चरपराहट को ध्यान में न लें तो वह पीपल शक्तिरूप से चौंसठ प्रहरी है। जैसे तिल में तेल की शक्ति भरी है, उसीप्रकार संसारी आत्मा भी शक्तिरूप से पूर्ण ही है। एकसमय के विकार को गौण कर दिया जाय तो संसार में रहनेवाले सभी आत्मा अशरीरी सिद्ध सदृश शुद्ध ही है।

अपने आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता से केवलज्ञानरूपी सुप्रभात जगता है, जो कभी अस्त नहीं होता।

यह बात ऊँची श्रेणी की नहीं है, यह तो प्रथम धर्म की बात है। लौकिक में सर्वप्रथम यह निश्चित करता है कि तिल में तेल है और तभी तिल को पेलने का भाव करता है और निकलने वाले तेल को तलने के काम में लाता है। रेती को नहीं पेलता

है; क्योंकि उसमें तेल नहीं है। वैसे ही आत्मा में आनन्दशक्ति भरी है, सर्वप्रथम यह निश्चय करे, एकसमय के विकार को गौण करे तो ज्ञान-आनन्द से आत्मा भरपूर पड़ा है – ऐसी प्रतीति उत्पन्न होने के बाद उसमें एकाग्रता करे तो शक्ति में से आनन्द आदि पर्यायें प्रगट हों और आनन्द अनुभव में आवे। इसलिये आत्मा परपदार्थ से जुदा है, किसी का कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है तथा राग-द्वेष भी मेरा स्वरूप नहीं है; परन्तु अनन्तज्ञान-दर्शनादि ही मेरा स्वरूप है, मेरा स्वभाव स्व-परप्रकाशक है – जगत के पदार्थों को, मुझमें रहने वाली अपूर्णता तथा राग को जानने का उसका स्वभाव है; ऐसा सर्वप्रथम निर्णय करे तो सम्यग्दर्शन प्रगट हो और एकाग्रता करने पर चारित्र प्रगट होकर केवलज्ञान हो और फिर कभी उसका नाश न हो।

जैसे परमानन्द दशा को प्राप्त सिद्ध भगवान हैं, वैसे संसारी जीव शक्तिरूप से हैं। अशरीरी सिद्धदशा प्रगट करने की शक्ति प्रत्येक जीव में है। इस गाथा में एकसमय की पर्यायबुद्धि छुड़ाई है। वस्तुदृष्टि से देखा जाय तो संसारी जीव भी जन्म-जरा-मरण से रहित हैं तथा अष्ट गुणों से अलंकृत हैं। इसकी प्रतीति करने से सम्यग्दर्शनादि प्रगट होकर सिद्धदशा की प्राप्ति होती है।

शुद्धस्वभाव की दृष्टि से संसारी और मुक्त जीवों में कोई अन्तर नहीं है।

शुद्धद्रव्यार्थिकनय के अभिप्राय से संसारी जीवों में और मुक्त जीवों में अन्तर न होने का यह कथन है।

शुद्धज्ञानस्वभाव जिस ज्ञान का प्रयोजन है अथवा जिस ज्ञान का अंश ऐसा निश्चय करता है कि ''मैं त्रिकालशुद्ध हूँ''; उस ज्ञान के अंश को शुद्धद्रव्यार्थिकनय कहते हैं। उस नय से ऐसा निश्चय होता है कि प्रत्येक जीव सिद्धसमान है। विकार और अल्पज्ञता का लक्ष्य छोड़कर आत्मद्रव्य को देखने पर प्रत्येक संसारी आत्मा भी सिद्ध जैसा है। इस नय से सिद्ध और संसारी जीव में अन्तर नहीं है; ऐसी प्रतीति करना प्रथम धर्म है। ऐसी प्रतीति पूर्वक स्थिरता करके ही जीव सिद्धदशा को प्राप्त हुए हैं। कारणपरमात्मा का ज्ञान-श्रद्धान करके कार्यपरमात्मा होते हैं; ऐसी तीर्थंकरदेव के श्रीमुख से वाणी निकली है।

जो जीव सिद्ध हुए वे किस रीति से सिद्ध हुए, वह क्रम बताते हैं।

जिस जीव में मोक्ष की योग्यता है और जिसको श्रद्धान हुआ कि 'मेरी मुक्ति अल्पकाल में है, मैं पुण्य-पाप के योग्य नहीं, मेरा स्वरूप अल्पज्ञता और विकार के लायक नहीं, मैं परमात्मा होने योग्य हूँ ह्न वह अति आसन्नभव्य जीव है। भव्य जीवों

में भी अति निकट योग्यतावाला जीव लिया। परपदार्थ में सुख है, ऐसी बुद्धि संसार है। ऐसी संसारदशा से थके हुए जीवों की बात ली है। संसार में जिन्हें सुख भासता है, वे तो पर्यायबुद्धि जीव हैं ह्न उनकी बात नहीं है। ''दया-दानादि के भाव भी क्लेशजनक हैं, मेरा शुद्धस्वभाव ही एकमात्र विश्राम लेने योग्य है'; इसप्रकार त्रिकाली स्वभाव की रुचि करके पुण्य-पाप से थककर, देव-गुरु-शास्त्र मुझे मुक्ति देंगे ह्न ऐसी निमित्त की रुचि छोड़कर और अपने स्वभाव का आश्रय लेकर जो जीव प्रवृत्त हुआ है; उसे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-प्राप्त होता है।

'सहज वैराग्य-परायण होने से द्रव्य-भावलिंग को धारण करके' अर्थात् सम्यग्ज्ञान प्राप्त होने के बाद सहज वैराग्य उत्पन्न हुआ है। प्रतिकूलता आने पर अथवा नरक के दुःखों को सुनकर स्वर्ग-प्राप्ति के लिए वैराग्य करे ह्न ऐसे मोहगर्भित वैराग्य की बात नहीं है। जिसको अपने आत्मा के भानसहित सहजवैराग्य वर्तता है, पर की ओर से उदासीन वृत्ति हो गई है, वह जीव जाग्रत हुआ है। पुण्य-पाप के अस्थिरता के भाव होते हैं, वह मेरा स्वरूप नहीं है; अपने स्वभाव में स्थिर होना ही मेरा कर्त्तव्य है ह्न इसप्रकार सहज वैराग्यपरायण होने से द्रव्य भावलिंग धारण किया है; सम्यग्ज्ञान तो था; परन्तु अब स्वभाव का विशेष अवलंबन लेकर भावलिंग प्रगट किया तब बाह्य से भी शरीर की नग्न दशा हुई है। वस्त्र छोडूँ, बाहर के परिग्रह को छोडूँ ह्न ऐसा आग्रह नहीं होता। मुनि के योग्य सहज आनन्द दशा की वीतरागी भूमिका प्रगट की अर्थात् द्रव्य-भावलिंग धारण किया, ऐसा कहा।

इसप्रकार सहज वैराग्य-परायण जीव स्वभाव में लीनतारूप अभ्यास से अव्याबाध ज्ञान-दर्शनादियुक्त सिद्धदशा को प्राप्त करता है।

परमगुरु के प्रसाद से प्राप्त परमागम के अभ्यास से सिद्धक्षेत्र को पाकर अव्याबाध (बाधारहित) सकल-विमल (सर्वथा निर्मल) केवलज्ञान, केवलदर्शन, केवलसुख, केवलवीर्य युक्त सिद्धात्मा हो गया। यह सिद्धात्मा कार्यसमयसाररूप है। यह सिद्धदशा शुद्धकार्य है।

मुनिपने के पश्चात् क्या किया? परमगुरु के प्रसाद से प्राप्त किये हुए परमागम के अभ्यास से सिद्धक्षेत्र को प्राप्त किया। परम आगम-दिव्यध्वनि का एवं अपने शुद्धस्वभाव में एकाग्रता का अभ्यास किया, परमागम के अभ्यास से सिद्धदशा प्राप्त की ह्न ऐसा निमित्त से कथन किया है।

परमगुरु तथा भगवान की वाणी ने ऐसा कहा था कि अपनी पर्याय को शुद्ध स्वभाव में लगानेरूप स्थिरता से शुक्लध्यान प्रगट होकर केवलज्ञान प्रगट होगा। इसप्रकार गुरु की वाणी का कहने का आशय स्वयं समझ लिया और अपनी श्रुतज्ञान की पर्याय को स्वभाव में एकाकार किया। २८ मूलगुण का पालन करते-करते मोक्ष होगा ह्न ऐसा नहीं कहा। चैतन्य-वीतरागी स्वभाव की एकाग्रता का अभ्यास करते-करते मोक्ष प्राप्त होगा। इसी रीति से अनन्तजीवों ने मोक्ष पाया, पाते हैं और पायेंगे।

'गुरु के प्रसाद से' यह भी निमित्त से कथन है। शिष्य की ऐसी योग्यता थी जिससे वह गुरु और वाणी को समझ गया, ऐसे योग्य जीव को ज्ञानी जीव ही निमित्त होता है, अज्ञानी नहीं ह्न तथापि गुरु के कारण पाया, ऐसा नहीं है। गुरु के कथन का आशय समझकर सिद्धदशा पाई अर्थात् गुरु के प्रसाद से प्राप्त किए हुए परमागम के अभ्यास से पाया ह्न ऐसा कथन करने में आता है।

वे सिद्ध आत्मायें कैसी है? बाधारहित, अन्तरायरहित, सर्वथा निर्मल, केवलज्ञानादि सहित हैं। इसप्रकार जो कोई अति आसन्नभव्य जीव हुए वे पहले संसारदशा में थे, पश्चात् सच्ची समझ करके सहज वैराग्यदशा लाकर मुनिपना अंगीकार करके सिद्धदशा को प्राप्त हुए। वे सिद्धात्मायें कार्यसमयसाररूप हैं ह्न कार्यशुद्ध हैं।

संसारी आत्मा और सिद्धात्मा की जाति एक ही है।

सिद्ध आत्मा को कार्यशुद्ध क्यों कहा? त्रिकाली कारणपरमात्मा जो शक्तिरूप है उसका अवलम्बन लेकर अपनी पर्याय में परिपूर्ण शुद्धदशा प्रगट की, कार्य प्रगट हुआ; अतः कार्यशुद्ध कहते हैं। अज्ञानीजीव 'पर का अथवा जड़ का कार्य कर सकता हूँ ह्न ऐसी मान्यता में अटका है। ज्ञानी स्व-पर को जानता और देखता है। यदि वर्तमान पर्याय को गौण कर दिया जाय तो संसारी आत्मा भी सिद्धसदृश शक्तिशाली है, उसमें श्रद्धा-ज्ञान करें तो वह परमात्मदशा को प्राप्त हो सकता है।

श्री आनन्दघनजी कहते हैं :- कि हे जिनेश्वर! भगवान स्वभाव की ओर की प्रीति में भंग न पड़े, पुण्य-पाप से, निमित्त से अथवा पर्याय से लाभ होगा ऐसी मान्यता मन में लाने नहीं दूँगा। जो तीर्थंकरादि हुए वैसे ही हम भी बनें, जो भगवान हुए, वे भी आत्मा थे और उन्होंने भी कारणशुद्ध-परमात्मा का आश्रय करके कार्यशुद्धपरमात्मापद प्रगट किया। हम भी उन्हीं की जाति के हैं; अतः हम भी सिद्धदशा प्रगट करेंगे। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : क्या त्याग धर्म नहीं है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शनपूर्वक जितने अंश में वीतरागभाव प्रगट हुआ, उतने अंश में कषाय का त्याग हुआ। सम्यग्दर्शनादि अस्तिरूप धर्म हैं और मिथ्यात्व व कषाय का त्याग नास्तिरूप धर्म है। सम्यग्दर्शन रहित त्याग धर्म नहीं है, यदि मन्दकषाय हो तो पुण्यबन्ध है।

प्रश्न : धर्म और अधर्म का आधार किस पर है ?

उत्तर : एक तरफ संयोग और दूसरी तरफ स्वभाव - दोनों एक ही समय हैं। वहाँ दृष्टि किस पर पड़ी है - इस पर धर्म-अधर्म का आधार है। संयोग पर दृष्टि है तो अधर्म होता है और स्वभाव पर दृष्टि है तो धर्म होता है।

प्रश्न : धर्म का आचरण क्या है ?

उत्तर : स्वभाव के साथ सम्बन्ध जोड़ना और पर के साथ सम्बन्ध तोड़ना अर्थात् जैसा अपना स्वभाव है, वैसा जानकर श्रद्धा-ज्ञान में स्वीकार करना दर्शन व ज्ञान का आचरण है, तत्पश्चात् उसी स्वभाव में उपयोग की एकाग्रता करना चारित्र का आचरण है। इसी आचरण से धर्म होता है, अन्य कोई धर्म का आचरण नहीं है।

प्रश्न : सामायिक कितने प्रकार की है ? उनमें से चतुर्थ गुणस्थान में कौन-कौन सी है ?

उत्तर : सामायिक चार प्रकार की है। ज्ञान सामायिक, दर्शन सामायिक, देशविरत सामायिक और सर्वविरत सामायिक। अपने पूर्ण ज्ञानस्वभाव का आदर करना और विकार का आदर नहीं करना ज्ञान-दर्शनरूप सामायिक है। पहले मिथ्यात्व के कारण ऐसा मानता था कि 'पुण्य भला और पाप बुरा', 'अमुक से लाभ और अमुक से हानि', तब श्रद्धा और ज्ञान में विषमभाव था। अब कोई भी परपदार्थ मुझे लाभ-हानिकारक नहीं, पुण्य-पाप दोनों ही मेरे स्वरूप नहीं - ऐसी स्वभावाश्रित सम्यक् श्रद्धा होने पर ज्ञान-दर्शन में समभाव प्रकट होना श्रद्धा-ज्ञानरूप सामायिक है। यह सामायिक आरम्भ-परिग्रह में रहने वाले सम्यग्दृष्टि के भी होती है और सदा

विद्यमान है, मात्र दो घड़ी की ही नहीं। स्वभाव की अधिक लीनता होने पर देशविरतिरूप सामायिक श्रावक को और विशेष अधिक लीनता होने पर सर्वविरतिरूप सामायिक मुनिदशा में होती है।

प्रश्न : क्या अकेला चारित्र ही ध्यान है अथवा सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान भी ध्यान के प्रकार हैं ?

उत्तर : शुद्धात्मस्वभाव की श्रद्धा करना भी परमात्मस्वभाव का ही ध्यान है। सम्यग्दर्शन भी स्वरूप की ही एकाग्रता है और सम्यग्ज्ञान भी ध्यान ही है तथा सम्यक्चारित्र भी ध्यान है। यह तीनों स्वाश्रय की एकाग्रतारूप ध्यान के ही प्रकार हैं और ध्यान से ही प्रगट होते हैं। राग की एकाग्रता छोड़कर स्वरूप की एकाग्रता करना ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है। अकेले ज्ञानस्वभाव में एकाग्रता करते ही रागादि की चिन्ता छूट जाती है, वहीं एकाग्रता चिन्ता-निरोधरूप ध्यान है और वही मोक्षमार्ग।

प्रश्न : ध्यान पर्याय को कथंचित भिन्न क्यों कहा है ?

उत्तर : समयसार गाथा 320 में जयसेनाचार्य ने ध्यान को कथंचित भिन्न कहा है। उसका अर्थ 'पर' की अपेक्षा से ध्यान पर्याय वह स्वयं की है, इसलिए अभिन्न है और शाश्वत ध्रुव द्रव्य की अपेक्षा से ध्यान पर्याय विनाशीक होने से भिन्न है।

वास्तव में तो द्रव्य और पर्याय दोनों भिन्न हैं।

प्रश्न : पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत - ऐसे धर्मध्यान के चार प्रकार हैं, उनमें कितने सविकल्प हैं और कितने निर्विकल्प हैं ?

उत्तर : परमार्थ से तो चारों ही प्रकार के धर्मध्यान निर्विकल्प हैं, क्योंकि जब विकल्प छूटकर उपयोग स्व में स्थिर हो तभी वास्तविक धर्मध्यान कहा जाए। प्रथम पिण्डस्थ अर्थात् देह में स्थित शुद्ध आत्मा; पदस्थ अर्थात् शब्द के वाच्यरूप शुद्ध आत्मा; रूपस्थ अर्थात् अरिहन्त सर्वज्ञदेव तथा रूपातीत अर्थात् देहातीत सिद्ध परमात्मा - इन चार प्रकार के स्वरूप का अनेक विधि चिन्तवन- अन्य स्थूल विकल्पों में से छूटकर, मन के एकाग्र करने के समय आवे, उसे व्यवहार धर्मध्यान कहते हैं। पश्चात् वह विकल्प भी छूटकर निजस्वरूप में उपयोग जमे तब वास्तविक धर्मध्यान कहा जाए।

इस भाँति चार प्रकार के सविकल्प चिन्तवन को व्यवहार से धर्मध्यान कहा, परमार्थ धर्मध्यान तो निर्विकल्प है। परमार्थ धर्मध्यान वीतराग है और वही मोक्ष का साधक है।

समाचार दर्शन -

47वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर देवलाली में सानन्द सम्पन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 700-800 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 48 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना ● बालबोध प्रशिक्षण में 164 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 80 विद्यार्थी सम्मिलित हुये ● शिविर में लगभग 70 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 21000 घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे।

देवलाली-नासिक (महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित 47 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर कहान नगर देवलाली में दिनाँक 21 मई से 7 जून, 2013 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

प्रात:कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के नियमसार ग्रन्थ पर सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार के मोक्ष अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन ह्न ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के 'प्रवचनसार के 47 नय' के आधार से हुए द्वितीय प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित अनिलजी जैन इन्दौर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त एक दिन ब्र. शांताबेन के जीवन-परिचय की सी.डी. भी सभी को दिखाई गई।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित विजयजी बोरालकर सोनागिर, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित अनेकान्तजी

दलपतपुर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा व पण्डित निखलेशजी दलपतपुर ने एवं **शिक्षण पद्धति की कक्षा** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कोमलचंदजी टडा व पण्डित निखलेशजी ने ली। **प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित धमेन्द्रजी कोटा ने एवं **शिक्षण पद्धति की कक्षा** पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित महावीरजी मांगुलकर, पण्डित रीतेशजी डडूका, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, विदुषी स्वर्णलता जैन नागपुर, डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा, विदुषी लताजी देवलाली का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षण कक्षाओं का संचालन पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी टडा के कुशल निर्देशन में पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

प्रौढ़ कक्षायें ह्न निमित्त-उपादान की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, नयचक्र (नैगमादि सप्तनय) की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं गुणस्थान विवेचन व दशकरण विषय की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर ने ली। प्रात:काल की प्रौढकक्षा क्रमश: पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अनिलजी इंजी. इन्दौर एवं पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा द्वारा ली गई।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 100-150 बच्चे सम्मिलित हुये।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन – दिनांक 7 जून को प्रात: 8.30 से 9.30 तक पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। अध्यक्ष के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों में ब्र. यशपालजी जैन, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी, ब्र. हेमचन्दजी, पण्डित अभयकुमारजी, पण्डित कोमलचंदजी, पण्डित कमलचंदजी, विदुषी कमला

भारिल्ल, विदुषी लताबेन देवलाली एवं सभी प्रशिक्षण अध्यापकगण के अलावा देवलाली ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई दोशी भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण वीकेश जैन खड़ैरी ने एवं सफल संचालन आशुतोष जैन आरोन ने किया।

वक्ताओं के रूप में अमित बण्डा, प्रज्ज्वल नागपुर, अनेकान्त रहली, संवेग जैन टीकमगढ, सिद्धान्त जबेरा आदि प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव बताये। इस अवसर पर अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने गांव में जाकर पाठशाला चलाने का संकल्प व्यक्त किया।

तत्पश्चात् यही सभा दीक्षान्त समारोह में परिवर्तित हो गई, जिसमें शिविर की रिपोर्ट बताते हुए पण्डित कमलचंदजी ने बताया कि प्रशिक्षण-शिविर में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, दिल्ली आदि अनेक प्रान्तों से बालबोध प्रशिक्षण में 164 विद्यार्थी थे, जिनमें से 145 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 64 ने विशेष योग्यता, 63 ने प्रथम श्रेणी, 13 ने द्वितीय श्रेणी एवं 1 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रवेशिका प्रशिक्षण में उपस्थित 80 विद्यार्थियों में से 73 ने परीक्षा दी। इनमें से 27 ने विशेष योग्यता, 37 ने प्रथम श्रेणी एवं 3 ने द्वितीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की।

अन्त में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का अध्यक्षीय उद्बोधन हुआ एवं सभी अध्यापकों को डॉ. भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये प्रवचनों की डी.वी.डी. तथा सभी उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र व सत्साहित्य प्रदान किया गया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान विवेक जैन जयपुर, **द्वितीय स्थान** ऋषभ जैन दिल्ली, **तृतीय स्थान** राहुल जैन जयपुर व दीक्षा राकेश जैन नागपुर ने प्राप्त किया। **बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान** श्रीमती प्रतिभा जैन उदयपुर, **द्वितीय स्थान** सुनीता विजय जैन भरतपुर व शाश्वत राजीव जैन भोपाल एवं **तृतीय स्थान** विकास जैन जयपुर ने प्राप्त किया।

अन्त में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने शिविर की व्यवस्था हेतु देवलाली के सभी ट्रस्टियों, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया, साथ ही सभी अध्यापकगणों व विद्वत्जनों का भी हार्दिक आभार व्यक्त किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ
4 से 13 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
2 से 9 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
9 से 18 सितम्बर	इन्दौर	दशलक्षण पर्व

पं.टोडरमलजी से सम्बद्ध विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ 47वें प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक 2 व 3 जून को परिषद के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में 'पण्डित टोडरमलजी का जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गई।

दिनांक 2 जून को संगोष्ठी के प्रथम सत्र का प्रारम्भ करते हुए विद्वत्परिषद् के उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल ने कहा कि दिनांक 2 नवम्बर 1944 को वीर शासन जयंती के दिन कोलकाता में श्रद्धेय श्री गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा विद्वत्परिषद की स्थापना की गई। डॉ. बंसल ने विद्वत्परिषद के उद्देश्य, कार्यक्रम और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री अंकित शास्त्री ने मंगलाचरण किया। पण्डित अनंतजी विश्वंभर शास्त्री सेलू ने पण्डित टोडरमलजी का जीवन परिचय एवं कर्तृत्व को रेखांकित किया। पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद ने मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रथम अध्याय के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में वर्णित जैनाभास विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने मोक्षमार्ग प्रकाशक और छहढाला का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

अन्त में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अध्यक्षीय उद्बोधन एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ संगोष्ठी का प्रथम सत्र समाप्त हुआ। संगोष्ठी का संचालन डॉ. राजेन्द्र कुमारजी बंसल द्वारा किया गया।

दिनांक 3 जून को संगोष्ठी का द्वितीय सत्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण श्री शुभम जैन ने किया। डॉ. बंसल ने सत्र का संचालन करते हुए कहा कि विद्वत्परिषद का सन् 1947 में सोनगढ में अधिवेशन हुआ था, जिसमें परिषद ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी और उनके साथ नवदीक्षित दिगम्बर जैन महानुभावों का अभिनन्दन किया गया था।

संगोष्ठी के प्रथम वक्ता पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा ने 'सम्यक्त्व की विभिन्न परिभाषाओं के समन्वय एवं उनकी एकात्मता' विषय पर प्रकाश डाला। ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में उद्धृत किये गये सात भयों पर प्रभावी वक्तव्य दिया। पण्डित नरेन्द्र कुमार जैन जबलपुर ने 'देव-भक्ति का अन्यथा रूप' विषय पर एवं ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' ने 'मोक्षमार्ग प्रकाशक और मैं' विषय पर विचार व्यक्त किये।

अध्यक्षीय उद्बोधन में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने आचार्यकल्प पण्डित

टोडरमलजी के यशस्वी जीवन की अंतिम हृदय-विदारक घटना, उनके द्वारा आजीविका के साथ-साथ विपुल जैन साहित्य के सृजन, टीकाग्रन्थ और उस काल की सामाजिक-राजनैतिक स्थिति आदि पर सप्रमाण प्रकाश डाला और उनके जैसे समर्पित व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का अनुरोध किया।

अन्त में डॉ. राजेन्द्र बंसल ने कहा कि संगोष्ठी के ये दो सत्र मात्र मंगलाचरण हैं। उन्होंने अध्यक्ष महोदय से अनुरोध किया कि भविष्य में भी शिविरों में पण्डित टोडरमलजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर संगोष्ठियाँ आयोजित करवायें, जिसका सभी ने करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। विद्वत्परिषद के कोषाध्यक्ष श्री शान्तिकुमारजी पाटील ने सभी विद्वानों एवं समागत बन्धुओं का आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी की विषय-वस्तु और पण्डित टोडरमलजी के जीवनवृत्त की जानकारी से श्रोता भावविभोर हुए और संगोष्ठी की सफलता की सराहना की।

उपकार दिवस एवं शिक्षण शिविर संपन्न

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री सीमन्धर दिगम्बर जैन मन्दिर की 50वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर दिनांक 5 से 12 मई तक स्वर्ण जयन्ती शिखर उत्सव, शिक्षण शिविर एवं गुरुदेवश्री की जन्मजयन्ती सानन्द संपन्न हुई। इस अवसर पर सीमंधर मण्डल विधान एवं याग मण्डल विधान का भी आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय 'नयचक्र' पर प्रवचन हुये।

अन्तिम दिन गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती श्री स्वप्निलजी जैन अलीगढ के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुई। ध्वजारोहण श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने किया।

शिविर में लगभग 230 बच्चों ने धार्मिक संस्कारों को ग्रहण किया। प्रतिदिन रात्रि में पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न कराये गये। इस अवसर पर इन्दौर, भोपाल, नागपुर, कोटा, चेन्नई, बेलगाम, महिदपुर, चिड़ावा, सुसनेर सहित अनेक नगरों के मुमुक्षु भाई-बहिनों ने उत्सव व शिविर का लाभ लिया।

समापन के अवसर पर विशाल जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

सीमंधर दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम का संयोजन जैन युवा फैडरेशन एवं सम्यक तरंग महिला मण्डल ने किया। शिविर व उत्सव में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान द्वारा विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही दि.जैन सोशल ग्रुप के पाँचों इकाई महिला परिषद, महासमिति के साथ-साथ नगर के सभी मंदिरों के ट्रस्टों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संपन्न कराये गये। **– जम्बू जैन धवल**

धूमधाम से मनाया गया संकल्प दिवस

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ चल रहे 47वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर शनिवार दिनांक 25 मई को संकल्प दिवस बहुत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। ज्ञातव्य है कि 25 मई को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का जन्मदिवस आता है और इस दिन को श्री टोडरमल स्नातक परिषद संकल्प दिवस के रूप में मनाता है।

79वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रात: अपने प्रवचन में डॉ. भारिल्ल ने जब अपने जीवन के उपकारी पुरुष के रूप में अपने माँ-पिताजी एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी को स्मरण किया तो सारी सभा भावविभोर हो गयी। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने भी अपने संस्मरण सुनाये।

सायंकाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचन के उपरान्त डॉ. भारिल्ल एवं बड़े दादा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल को उनके शिष्यगण अपने हाथों से तोरणद्वार बनाकर सभास्थल तक लाये। इसके बाद फैडरेशन के राजस्थान प्रान्त के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, ब्र. रमाबेन देवलाली, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने अपने संस्मरण सुनाते हुए डॉ. भारिल्ल के बहुआयामी व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए उन्हें जन्मदिवस की शुभकामना दी एवं इसी प्रकार वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आजीवन जुड़े रहने की कामना की।

इसी अवसर पर श्रीमती सीमा जैन उदयपुर द्वारा 'डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने पर उनका सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती सीमा जैन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर की धर्मपत्नी है।

भोपाल से पधारे श्री विनयप्रकाशजी एडवोकेट ने सकल तारण-तरण दिगम्बर जैन समाज की ओर से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया। स्नातक परिषद ने डॉ. भारिल्ल को जन्मदिवस के उपहार स्वरूप कलम भेंट की, ताकि वे अपने करकमलों से निरन्तर जिनवाणी लिखते रहें। तत्पश्चात् स्नातक परिषद के उपस्थित सभी सदस्यों ने खड़े होकर डॉ. भारिल्ल के समक्ष आजीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया, जो निम्नानुसार है-

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके समक्ष देव-शास्त्र-गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का आजीवन संकल्प

लेते हैं। हम सदैव तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।''

संकल्प का वांचन स्नातक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया और स्नातक परिषद के सभी सदस्यों एवं अन्य सभी विद्यालयों से आये प्रशिक्षणार्थी छात्रों ने जब ऊँचे स्वर से दोहराया, तब इस दृश्य को देखकर पूरी सभा भावविभोर हो गयी।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप सभी को मेरी यही प्रेरणा है कि **''तात्कालिक परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना आलोचना प्रत्यालोचना से दूर रहकर जो भी व्यक्ति तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के काम में निरन्तर जुड़ा रहेगा। वह अवश्य सफल होगा। आप सभी अपने जीवन में सफल हों - यही मेरा आशीर्वाद है।''**

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अभयजी शास्त्री ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

डलास (अमेरिका) में अभूतपूर्व

शिविर का आयोजन

जैन सोसायटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास के द्वारा दिनांक 30 मई से 2 जून तक त्रिदिवसीय ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें प्रात: 9.30 से 11 बजे तक तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, 11 से 12 बजे तक जैनभूगोल की कक्षा, 3 से 4 बजे तक बारह भावना पर प्रवचन, 4 से 5 बजे तक जैनभूगोल की कक्षा, 5 से 6.30 बजे तक तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन एवं रात्रि में 8 से 9 बजे तक पुन: बारह भावना पर प्रवचन का लाभ मिला। रविवार दिनांक 2 जून को प्रात: सामूहिक पूजन का कार्यक्रम भी रखा गया। सभी प्रवचन एवं कक्षायें पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा ली गयीं। शिविर के समस्त कार्यक्रम श्री अतुलभाई खारा डलास के निर्देशन में संपन्न हुए।

शिविर में लगभग 125 लोगों ने धर्मलाभ लिया। शिविर की सफलता को देखते हुए प्रतिवर्ष शिविर लगाने का निर्णय लिया गया। शिविर के पश्चात् भी चार दिन दोनों समय समयसार एवं नैगमादि नयों पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि डलास के पश्चात् शिकागो, मियामी, टोरंटो एवं डेट्रोयट में भी पण्डित संजीवजी के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री जैन दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 18 से 20 मई तक श्री 1008 चौबीस तीर्थंकर तीर्थंकर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में जिनेन्द्र मंगल कलश एवं इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रापूर्वक 24 तीर्थंकरों को प्रतिष्ठा मण्डप लाकर मनोहारी वेदी में विराजित किया गया। इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा श्री पंच परमेष्ठी विधान किया गया। दोपहर में विद्वानों के प्रवचन एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के बाद बालिकाओं, महिला मण्डल तथा दिगम्बर जैन बालबोध की सभा द्वारा धार्मिक नाटक-जम्बूस्वामी का वैराग्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में मेरठ, खतौली, खेकड़ा, देवबंध, नकुल, मुजफ्फरनगर, देहरादून आदि स्थानों से सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर एवं पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा संपन्न कराये गये।

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का ह्न

महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ दिनाँक 1 जून को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' आदि मंचासीन थे। कार्यकारिणी सदस्यों के अन्तर्गत डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री तथा महाराष्ट्र प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्यों में पण्डित जिनचंदजी शास्त्री आलमान, पण्डित अनंतजी शास्त्री विश्वंभर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, नेमिनाथजी शास्त्री, निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, रितेशजी शास्त्री डडूका आदि स्नातक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

विद्वत्गणों के मार्गदर्शन हेतु डॉ. भारिल्ल एवं ब्र. यशपालजी ने अपना उद्बोधन दिया। अध्यक्षीय भाषण के अन्तर्गत पण्डित अभयजी द्वारा अपना वक्तव्य दिया गया।

मंगलाचरण ब्र. अभिनन्दनकुमारजी ने एवं स्वागतभाषण व संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के चेतना अभियान में शामिल हों, सहयोग करें –

फैडरेशन के देवलाली अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव के सन्दर्भ में शाखाओं को निर्देश

– अपने मौहल्ले/गाँव/नगर में स्थित जैन समाज के अन्य संगठनों से समन्वय स्थापित कर इस दिशा में मिलकर साथ-साथ काम करने की कार्य योजना तैयार करें।

– अपने मौहल्ले/गाँव/नगर के जैन/जैनेतर सभी प्रबुद्ध नागरिकों की मीटिंग आयोजित कर नागरिकों में व्याप्त असुरक्षा के वातावरण को दूर करने और परस्पर सहयोग से एक स्वस्थ वातावरण निर्मित करने की दिशा में कदम उठाये जायें, यथा –

● मौहल्ले/गाँव/नगर के स्तर पर इस कार्य हेतु विशिष्ट समितियों की रचना की जावे।

● मौहल्ले/गाँव/नगर के लोग अपने यहाँ के माँ/बहिन/बेटियों की रक्षा करना अपना प्रथम कर्तव्य स्वीकार करें और कभी भी, कहीं भी यदि कोई असामान्य गतिविधि नजर आये तो तुरन्त अकेले या अन्य सम्बन्धित लोगों से मिलकर उसे रोकने का सक्रिय उपक्रम करें।

● समाज का प्रतिनिधि मण्डल गाँव/नगर के प्रशासकों (कलेक्टर, सरपंच, थानेदार आदि अधिकारी) से मिलकर समाज की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा जाये और इस दिशा में काम करने हेतु उनका सहयोग सुनिश्चित करें, कार्य योजना तैयार करें और इस दिशा में त्वरित कार्यवाही हेतु विशिष्ट अधिकारी की नियुक्ति करवाने का प्रयास करें।

● समाज में जागरूकता पैदा करने हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जायें। आज की जीवनशैली में व्याप्त विकृतियों से उत्पन्न खतरों के प्रति उन्हें सचेत करते हुए उपयुक्त, विवेकपूर्ण सात्विक और मर्यादापूर्ण जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जाये।

● आत्मरक्षा के उपलब्ध साधनों की जानकारी दी जाए।

● किसी संभावित खतरे की स्थिति में किये जा सकने वाले सुरक्षा उपायों से परिचित करवाया जाये।

● समाज के नैतिक स्तर के विकास हेतु, शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किये जायें।

● सदाचार से युक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी जाये।

फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने यहाँ इस दिशा में किये जाने वाले कार्यों की सूचना/सुझाव केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य दें और यदि किसी भी प्रकार के सहयोग या मार्गदर्शन की आवश्यकता अनुभव करें तो अवश्य संपर्क करें।

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, महामंत्री

प्रस्ताव

वर्तमान में देश मे घटित हो रही समाज विरोधी घटनाओं ने प्रत्येक सामान्य नागरिक को आन्दोलित कर दिया है और हमारा समाज भी आग की इन लपटों की तपन से अप्रभावित नहीं रहा है।

हमारा समाज न सिर्फ उक्त घटनाओं के दुष्प्रभावों से मुक्त रहे वरन् सारे देश को इस संकट से उबारने के लिये एक सक्रिय मार्गदर्शक का काम करे इस हेतु यह सदन प्रस्तावित करता है कि समाज में, विशेषकर युवा वर्ग एवं बालवर्ग में नैतिक उत्थान हेतु विशेष प्रयास किये जायें।

उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जीवन में उज्ज्वल चरित्र की मर्यादायें रेखांकित की जाये और उनके महत्व को स्थापित किया जाये, प्रचारित किया जाये।

हमारी माँ, बहिन और बेटियों की शील रक्षा का यह उपक्रम मौहल्ले और गाँव-नगर के सभी जनसामान्य (प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों) के सहयोग के बिना संभव नहीं है। तदर्थ फैडरेशन की सभी शाखायें समाज के अन्य संगठनों के सहयोग से उक्त सभी लोगों से संपर्क स्थापित कर इस विषय में सहमति और सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करें।

वर्तमान में इस विषय में आदरणीय बाल ब्र. रवीन्द्रजी एवं उनके शिष्य ब्र. सुमतप्रकाशजी के विशिष्ट विचार हैं। इस प्रस्ताव के माध्यम से यह सदन उनसे भी निवेदन करता है कि इस पुण्य कार्य में अपना मार्गदर्शन ही नहीं, सक्रिय सहयोग भी प्रदान करें। इस कार्य में यह संगठन पूरी तरह उनके साथ है।

आवश्यक निर्देश : फैडरेशन की सभी शाखाएं अपनी सामान्य सभा की मीटिंग बुलाएं, जिसमें स्थानीय जैन समाज को भी आमंत्रित करें और उक्त प्रस्ताव अनुमोदित करवायें। उक्त अनुमोदन की सूचना हमारे केन्द्रीय को भिजवा दें, जिसे 'जैनपथप्रदर्शक' में प्रकाशित किया जाएगा।

समाज के नैतिक उत्थान हेतु –

फैडरेशन द्वारा संचालित ''चेतना अभियान'' में आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं -

- उक्त अभियान की सूचना अधिकतम लोगों तक पहुंचाकर।
- अधिकतम लोगों को इस अभियान से जोड़कर।
- समाज के विभिन्न वर्गों तक इस अभियान का संदेश पहुंचाकर।
- स्वयं संकल्प पत्र भरकर एवं अन्य अधिकतम लोगों से भरवाकर।
- सोश्यल नेटवर्किंग साइट्स पर संबन्धित सामग्री प्रकाशित कर।
- उपयोगी सूचनाएं और प्रचार सामग्री हम तक पहुंचाकर।
- अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए, सामाजिक सुरक्षा के उपायों में सहयोगी बनकर।
- समाज में जागरूकता पैदा करने वाली गतिविधियों में शामिल होकर एवं ऐसी ही गतिविधियाँ स्वयं आयोजित /संचालित कर। **– महामंत्री**

पाठशाला का वार्षिकोत्सव संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ हनुमानगंज के दि.जैन मन्दिर में पाठशाला का वार्षिकोत्सव समारोह संपन्न हुआ, जिसमें 100 से अधिक छात्रों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भागचन्द्रजी जैन ने कहा कि प्रत्येक रविवार को आयोजित इस पाठशाला में शिक्षण कार्य श्रीमती सरोजलता जैन व श्रीमती पूनम जैन द्वारा किया जाता है, जो बहुत प्रशंसनीय है। पाठशाला की वार्षिक रिपोर्ट में श्री अनंतवीर जैन ने बताया कि बच्चों को धार्मिक ज्ञानवर्धन हेतु तीर्थस्थानों का भी भ्रमण एवं धार्मिक खेलों के माध्यम से ज्ञानवर्धन किया जाता है। कार्यक्रम का मंगलाचरण पाठशाला की छात्राओं ने एवं संचालन पण्डित अनुराजजी शास्त्री ने किया।

उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक तथा भूतपूर्व अधीक्षक **पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर** ने एम.ए. (संस्कृत) में सम्पूर्ण छत्तीसगढ में मेरिट में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इस उपलक्ष्य में उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा रजत पदक प्रदान करने की घोषणा की गयी है।

इस उपलब्धि हेतु महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार उन्हें हार्दिक बधाई देता है एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मालवीय नगर सेक्टर-7 में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा 14वाँ बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 1 से 10 जून 2013 तक किया गया।

शिविर में पण्डित मनीषजी कहान द्वारा णमोकार महामंत्र, मंगलाचरण, जिनपूजन रहस्य आदि जिनागम के विविध विषयों पर सरल भाषा में प्रवचन हुये एवं प्रतिदिन प्रवचन आधारित एक वर्कशीट श्रोताओं को दी गई और जिन्हें श्रोताओं द्वारा उत्साहपूर्वक हल किया गया। इस अवसर पर पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बच्चों की कक्षा ली गई।

शिविर में सम्मिलित बच्चों की परीक्षा दिनांक 9 जून को ली गई एवं 10 जून को परीक्षा परिणाम घोषित कर पुन: पुरस्कृत किया गया।

शिविर में पण्डित विमलकुमारजी बनेठा, राजकुमारजी कासलीवाल, श्री सुमतिचंदजी, श्री गिरीशजी, श्री सुमेरजी, श्री सुरेशजी, श्री पद्मचंदजी इत्यादि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

(2) जयपुर (राज.) : यहाँ मधुवन कॉलोनी में दिगम्बर जैन महासमिति जयपुर द्वारा दिनांक 20 से 30 मई 2013 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर एवं पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा बच्चों की कक्षा ली गई, जिसमें संस्कार सरोवर भाग-1, 2, 3 का पठन-पाठन किया गया।

शिविर में लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया, जिनकी परीक्षा दिनांक 30 मई को ली गई।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई
द्वारा संचालित

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

36 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(दिनांक 4 अगस्त से 13 अगस्त, 2013 तक)

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

शोक समाचार

1. फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सरोजलता जैन का दिनांक 29 मई को 73 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं। फिरोजाबाद में आप वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन भी करती थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनन्तवीर जैन की दादीजी थीं।

2. बालापुर-आखाड़ा (महा.) निवासी श्रीमती लक्ष्मीबाई विट्ठलराव कंधारकर (जैन) का दिनांक 10 मई को अत्यन्त शांतपरिपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 251/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

3. दमोह (म.प्र.) निवासी श्रीमती श्रीरानीजी जैन का दिनांक 17 मई को 76 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 101-101/- रुपये प्राप्त हुये।

4. कोलारस (म.प्र.) निवासी श्री हुकमचन्दजी जैन का दिनांक 28 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक सुरेशजी शास्त्री के पिताजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 100-100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

छात्र प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) की ग्रीष्मकालीन परीक्षा अगस्त 2013 में होने जा रही है। संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली प्रवेश फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं; अत: शीघ्रातिशीघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर भिजवा देवें।

कदाचित खाली छात्र प्रवेश फार्म डाक की गड़बड़ी से उपलब्ध नहीं हुए हों तो परीक्षा बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क कर तत्काल मंगा लेवें। **- ओ.पी. आचार्य, प्रबंधक**

मुक्त विद्यापीठ के परीक्षार्थी ध्यान दें

विशारद एवं सिद्धान्त विशारद की प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून के अन्तिम सप्ताह और जुलाई के प्रथम सप्ताह में होने वाली हैं, सभी परीक्षार्थियों को उनके पेपर कोरियर/डाक द्वारा डिस्पेच कर दिये गये हैं, जो उन्हें 25-30 जून के बीच प्राप्त हो जावेंगे। यदि 30 जून तक पेपर प्राप्त न हो तो जयपुर कार्यालय को सूचित करें। **- प्रबन्धक-ओ.पी. आचार्य, श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015**